International Journal of Applied Research 2017; 3(2): 355-358

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(2): 355-358
www.allresearchjournal.com
Received: 23-12-2016
Accepted: 24-01-2017

अमित कुमार
शोधछात्र (पीएच.डी.) संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली–110007

Correspondence
अमित कुमार
शोधछात्र (पीएच.डी.) संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली–110007

अग्निपुराण का काल–निर्धारण

अमित कुमार

भूमिका

प्राचीन भारतीय साहित्य में पुराणों का विशेष महत्त्व है। इनको भारतीय ज्ञान–विज्ञान का कोष कहा जा सकता है। इनमें भारतीय धर्म, संस्कृति और परम्पराओं का सरल भाषा में संग्रह है। ये हिन्दू धर्म के आधार हैं और ज्ञान–विज्ञान के अमूल्य कोष हैं। पुराणों की संख्या 18 है इसके अतिरिक्त 18 उपपुराण भी हैं।

इन अठारह पुराणों में अग्निपुराण का अपना विशिष्ट महत्त्व है। इस पुराण में विविध विद्याओं का संकलन है। धर्म और संस्कृति से सम्बन्धित अनेक तथ्यों का विवेचन करने के साथ ही अग्निपुराण में अनेक शास्त्रों का विवेचन भी है। इस पुराण में व्याकरणशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, काव्यशास्त्र, ज्योतिष आदि शास्त्रों के सम्बन्ध में पुष्कल सामग्री दी गई है। भारतीय एवं पाश्चात्त्य समालोचकों ने अग्निपुराण की सामग्री को महत्त्वपूर्ण माना है और इसको विश्वकोष के रूप में स्वीकार किया है। डॉ. बलदेव उपाध्याय [1] और विन्टरनिट्ज[2] के अनुसार यह पुराण एक विश्वकोष है।[3] इसमें भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न विषयों का संग्रह किया गया है।

भारतीय परम्पराओं के अनुसार 18 पुराणों के लेखक महर्षि वेदव्यास हैं। परन्तु आधुनिक आलोचकों को यह मान्य नहीं है। अतः अग्निपुराण का लेखक कौन है। इस प्रश्न का उत्तर ग्रन्थ के आरम्भ में ही दिया गया है कि इस पुराण का उपदेश अग्नि ने वसिष्ठ को दिया था। अतः इस पुराण के प्रणेता अग्नि समझे जा सकते हैं।[4] अग्नि नामक किसी ऐतिहासिक व्यक्ति के होने का प्रमाण नहीं मिलता। अतः आधुनिक आलोचकों की दृष्टि में अग्निपुराण के मूल लेखक का नाम जानना कठिन ही है। डॉ. एस.के.डे. के अनुसार इस पुराण के लेखक का नाम अज्ञात है। इसके संबंध में यही कहा जा सकता है कि भिन्न–भिन्न समयों में अनेक लेखकों ने इसको लिखा और संकलित किया तथा इसका अन्तिम रूप से संकलन और सम्पादन महर्षि व्यास एवं उनकी परम्परा ने किया था।

अग्निपुराण का रचना काल

प्राचीन भारतीय वाङ्मय के काल का निर्धारण करना एक अत्यन्त जटिल कार्य है और उनमें भी पुराणों का रचनाकाल को ज्ञात करना अत्यधिक कठिन कार्य है। अतः अग्निपुराण के काल–निर्धारण का कार्य भी विद्वानों के लिए दुष्कर साबित हुआ है। पुरातनवादी विद्वान तो पुराणों को अनादि अथवा वेदों के पश्चात् महर्षि व्यास एवं उनकी परम्परा द्वारा रचित मानते हैं परन्तु आधुनिक आलोचक इससे पूर्णतः सहमत नहीं है। डॉ. विन्टरनित्ज ने अग्निपुराण के काल निर्धारण के विषय में कहा है कि इस पुराण की रचना कब हुई, यह कहना अत्यन्त कठिन है। क्योंकि इसमें परस्पर विरोधी विषयों का समावेश है।

अग्निपुराण की रचना का समय निर्धारित करने के लिए विभिन्न विद्वानों के दो मत हैं – (1) भरतमुनि के समकालीन मानने वाले (2) भोज से उत्तरवर्ती मानने वाले।

इन दोनों मतों का अन्तः साक्ष्य एवं बाह्य साक्ष्यों द्वारा विवेचन किया जाएगा।

(i) भरतमुनि के समकालीन अग्निपुराण का रचना काल

(1) अन्तः साक्ष्य – अन्तः साक्ष्यों से अभिप्राय उन सामग्रियों से है जो हमें अग्नि पुराण में उपलब्ध होती है। यद्यपि अग्निपुराण स्पष्ट रूप से तो अपनी रचना का समय निर्दिष्ट नहीं करता तथापि

---

1 बलदेव उपाध्याय कृत संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 51

2 ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर (प्रथम भाग) – विन्टरनित्ज, पृ. 566

3 ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोऐटिक्स। एस.के.डे., पृ. 254

4 यत्तदीशानकं कल्पं वृत्तान्तमधिकृत्य च।
वसिष्ठायाग्निना प्रोक्तमाग्नेयं तत्प्रचक्षते।। अग्निपुराण 116

इसमें उपलब्ध कुछ सामग्री से हम इसके काल निर्धारण का प्रयास कर सकते हैं।

(i) पूर्ववर्ती सीमा का निर्धारण

(क) अग्निपुराण[5] में 5वें अध्याय से 15वें अध्याय तक में रामायण[6] एवं महाभारत[7] का वर्णन मिलता है जिससे सिद्ध होता है कि अग्निपुराण दोनों महाकाव्यों के बाद की रचना है।[8]

(ख) अग्निपुराण में विविध विषयों की विवेचना के सन्दर्भ में प्राचीन काल के अनेक आचार्यों का उल्लेख मिलता है। जैसे छन्द के सम्बन्ध में 'पिंगल' गजशास्त्र के सम्बन्ध में 'पालकाव्य' [9] अश्वविद्या के सम्बन्ध में 'शालिहोत्र'[10] आयुर्वेद के सम्बन्ध में 'धन्वन्तरि'[11] और सुश्रूत'[12] तथा राजनीति के सम्बन्ध में 'पुष्कर' तथा स्त्रीपुरुष लक्षण के सन्दर्भ में 'समुद्र' आदि। इन आचार्यों के नामोल्लेख से इतना तो निश्चित है कि ये आचार्य अग्निपुराण की रचना के समय तक परम ख्याति को प्राप्त कर चुके थे। और उनका मत अग्निपुराण के समय तक अत्यन्त मान्य हो चुका था।[13]

(ii) परवर्ती सीमा का निर्धारण

(ग) अग्निपुराण में वर्णित काव्यशास्त्र का अध्ययन करने पर पता लगता है कि अग्निपुराण ने भाषा की दृष्टि से काव्य के दो प्रकार बताए हैं – संस्कृत और प्राकृत। अपभ्रंश को अग्निपुराण में काव्यभेद के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। क्योंकि अपभ्रंश का उदयकाल छठीं शताब्दी माना जाता है।[14] अतः स्पष्ट होता है कि छठीं शताब्दी से पूर्व अग्निपुराण की रचना हो चुकी थी।

(घ) अग्निपुराण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इसमें तान्त्रिक आगमों का प्रभाव अधिक मात्रा में पड़ा है। डॉ. पारसनाथ द्विवेदी के अनुसार अग्निपुराण का तान्त्रिक भाग बौद्ध काल के तान्त्रिक प्रचार से साम्य रखता है। बौद्धों का उच्छेद वैदिक कर्मकाण्ड के पुनरुत्कर्ष के बाद हो गया था। यह समय लगभग पाँचवीं शताब्दी के समीप माना जाता है।[15] अतः अग्निपुराण का अस्तित्व इसके पूर्व का सिद्ध होता है।

(2) बाह्य साक्ष्य – बाह्य साक्ष्यों से अभिप्राय अग्निपुराणेत्तर कुछ विभिन्न ग्रन्थों से है जिनमें वर्णित किंचित् सामग्री के आधार पर अग्निपुराण के काल–निर्धारण का प्रयास किया जा सकता है। स्वयं पुराण, स्मृति साहित्य, नाट्यशास्त्र, भामह, दण्डी आदि के काव्यशास्त्र विषयक ग्रन्थ, अमरकोष, सरस्वतीकण्ठाभरण आदि रचनाएँ इसी श्रेणी में आती हैं।

(i) पूर्ववर्ती सीमा का निर्धारण

(क) पुराणों में उपलब्ध सूची के आधार पर अष्टादश पुराणों में अग्निपुराण का आठवाँ स्थान है। स्पष्ट है कि कालक्रम की दृष्टि से यह कुछ पुराणों से अर्वाचीन तथा कुछ पुराणों से प्राचीन सिद्ध होता है।

(ख) अग्निपुराण में कुछ स्मृतिकालीन सामग्री भी मिलती है। राजधर्म विषय के 252–357 तक के इन छः अध्यायों में व्यवहारों का विवेचन किया गया है। इनमें से लगभग 30 श्लोक नारदस्मृति[16] से और 280 श्लोक याज्ञवल्क्य[17] स्मृति से समानता रखते हैं। इनमें से कौन सा ग्रन्थ किसका ऋणी है यह निश्चित रूप से नहीं जा कहा जा सकता। यदि परम्परानुसार यह मान लिया जाए कि दोनों का उद्देश्य जन–जन में धर्म प्रचार करना था तो दोनों ग्रन्थ समकालीन सिद्ध होते हैं।

(ii) उत्तरवर्ती सीमा का निर्धारण

(ग) अग्निपुराण में रूपक, आक्षेप, समासोक्ति, पर्यायोक्त और अप्रस्तुतप्रशंसा ये पाँचों ध्वनिमूलक अलंकार माने गये हैं। ये भामह के काव्यालंकार में प्रतिपादित लक्षणों से ज्यों से त्यों मिलते हैं। जैसे रूपक के लक्षण में –

उपमानेन यत्तत्वमुपमेयस्य कथ्यते।[18]
गुणानां समतं दृष्ट्वा रूपकं नाम तद्विदुः।।

अग्निपुराण/भामह काव्यालंकार

इससे यह स्पष्ट होता है कि भामह[19] के काव्यालंकार के पूर्व अग्निपुराण अवश्य विद्यमान था जिसकी छाया काव्यालंकार पर लक्षित होती है।

(घ) अग्निपुराण में वर्णित रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, विभावना, विशेषोक्ति तथा समाधि अलंकारों के लक्षण अग्निपुराण और काव्यादर्श में एक से मिलते हैं जैसे उत्प्रेक्षा के लक्षण में –

अन्यथोपस्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य च।
अन्यथा मन्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां प्रचक्षते।। अग्निपुराण/काव्यादर्श

अतः काव्यादर्श पर अग्निपुराण का प्रभाव लक्षित होता है। उपर्युक्त आधार पर अग्निपुराण का रचनाकाल भरतमुनि के समकालीन प्रतीत होता है।

भोज से उत्तरवर्ती अग्निपुराण का रचनाकाल

प्रथमाध्याय में अग्निपुराण को भरतमुनि के समकालीन माना है। जिसमें अग्निपुराण का भामह, दण्डी, भोज इत्यादि आचार्यों से पूर्व रचनाकाल का प्रतिपादन किया है। परन्तु आधुनिक आलोचकों के अनुसार 'अग्निपुराण' बहुत बाद की रचना है। इसका वर्तमान रूप भरत, भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन और भोज के भी बाद का है। 'अग्निपुराण' को इतना अर्वाचीन सिद्ध करने के लिए अन्त साक्ष्यों व बाह्य साक्ष्यों के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

(क) अन्तःसाक्ष्य

(i) पूर्ववर्ती सीमा का निर्धारण

(क) अग्निपुराण में रामायण[20], महाभारत[21], हरिवंश[22], पिंगल[23], धन्वन्तरि और सुश्रुत के उल्लेख हैं। इसमें अमरकोष से सम्बन्धित सामग्री भी है। 'भगवद्गीता' को भी सार रूप से दिया गया है। यह सम्पूर्ण सामग्री इन ग्रन्थों से ली गई होगी। 'अमरकोष' के

---

5 अग्निपुराण, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1966

6 600 ई.पू., भारतीय साहित्य का इतिहास, विन्टरनित्ज

7 1000 ई. से उत्तर सीमा 'चौथी पाँचवी शताब्दी' – संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 260

8 150 ई.पू. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, काणे, पृ. 9

9 अज्ञात, किन्तु आलोचक ई.पू. ही मानते हैं – हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोयटिक्स, सुशील कुमार डे, पृ. 97–99

10 प्रथम शताब्दी – संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 69 (पोद्दार)

11 150 ई.पू. – पतंजलि के समकालीन, भारतीय साहित्य का इतिहास, विन्टरनित्ज

12 सश्रुत 150 ई.पू. – पतंजलि के समकालीन, भारतीय साहित्य का इतिहास, विन्टरनित्ज

13 पुष्कर, अज्ञात, किन्तु ई.पू. निर्धारण, संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, काणे, पृ. 216

14 संस्कृत साहित्य का इतिहास, ए.बी. कीथ, पृ. 40

15 संस्कृत साहित्य का इतिहास, पोद्दार, पृ. 395

16 काणे, हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र, वाल्युम 9, पृ. 524 पाँचवीं शताब्दी ई.पू.

17 चौथी–पाँचवीं शताब्दी ईसवी, हिस्ट्री धर्मशास्त्र, काणे

18 पांचवीं–छठीं शताब्दी ई. के मध्य – अलंकार शास्त्र का इतिहास, पृ. 66

19 सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध, संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, काणे, पृ. 73

20 अमरटीका सर्वस्व, भाग–9, पृ. 111, 125, 133

21 ध्वन्यालोक आनन्दवर्धन प्रथमउद्योत, पृ. 67

22 ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, प्रथमउद्योत, पृ. 24

23 नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध, अलंकार शास्त्र का इतिहास, पृ. 1000

रचयिता अमरसिंह का समय चौथी शताब्दी से पूर्व नहीं ले जाया जा सकता।

(ख) 'अग्निपुराण' में भारती वृत्ति के सम्बन्ध में कहा गया है कि भरत[24] द्वारा प्रणीत होने से इसको भारती कहा गया है। भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में स्वयं यह कहा कि इस वृत्ति का प्रणयन उन्होंने स्वयं किया था। नाट्यशास्त्र के अनेक पद्य और पद्यों के अंश 'अग्निपुराण' में उद्धृत है। इससे यह सिद्ध होता है कि 'अग्निपुराण' की रचना निश्चित रूप से भरत के बाद हुई थी।

(ग) अग्निपुराण के काव्यशास्त्रीय भाग का रचयिता ध्वनि सिद्धान्त से परिचित था। अग्निपुराण में एक स्थान पर कहा गया है कि ध्वनि का पर्यायोक्त, अपह्नुति, समासोक्ति, अप्रस्तुत प्रशंसा या आक्षेप अलंकारों में समावेश हो जाता है। ध्वन्यालोक के दो पद्य 'अपारे काव्यसंसारे' तथा 'शृङ्गारीचेत्कवि' अग्निपुराण में मिलते हैं।[25] ध्वन्यालोक के प्रसंगों से तथा उत्तरवर्ती टीकाकारों के कथन से यह प्रतीत होता है कि इन पद्यों की रचना स्वयं आनन्दवर्धन ने की थी। अतः 'अग्निपुराण' को आनन्दवर्धन[26] के बाद की रचना मानना चाहिए।

(घ) 'अग्निपुराण' बहुत बाद की रचना है, यह तथ्य इस बात से भी सिद्ध होता है कि काव्यशास्त्र के प्राचीन आचार्यों ने 'अग्निपुराण' को प्रमाण के रूप में कम उद्धृत किया था। भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन, भोज आदि विद्वान भरत को तो आदर के साथ उद्धृत करते रहे, परन्तु अग्निपुराण को नहीं।

(ङ) भोजकृत 'सरस्वतीकण्ठाभरण' तथा 'शृङ्गारप्रकाश' का भी प्रभाव 'अग्निपुराण' पर पड़ा है। भोज ने शृङ्गारप्रकाश में रस सिद्धान्त का विवेचन किया था। उसने 'सरस्वतीकण्ठाभरण' में यह प्रतिपादित किया था कि शृङ्गार रस ही सब रसों का मूल हैं।[27] भोज के अनुकरण में ही 'अग्निपुराण' में भी शृङ्गार रस को सब रसों का मूल कहा गया है।[28] पांचाली, गौडी, वैदर्भी तथा लाटी इन चार रीतियों के जो लक्षण भोज ने दिये हैं, बहुत कुछ उनका ही अनुकरण 'अग्निपुराण' में है।[29]

अतः 'अग्निपुराण' के काव्यशास्त्रीय भाग को बहुत प्राचीन मानना युक्तिसंगत नहीं है। यह रचना भरत, भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन और भोज के बाद की समझनी चाहिए।

(ii) उत्तरवर्ती सीमा का निर्धारण

अग्निपुराण को सबसे पहले 'साहित्यदर्पण' के रचयिता विश्वनाथ ने जो 14वीं शताब्दी में हुये थे, 'अग्निपुराण' को उद्धृत किया था।[30]

ऊपर वर्णित तथ्यों और तर्कों को दृष्टि में रखकर यह कहा जा सकता है कि अग्निपुराण आचार्य भोज से उत्तरवर्ती रचना है।

विभिन्न विद्वानों के मत

'अग्निपुराण' विश्वकोष के रूप में है तथा उसमें अनेक विषयों का संकलन है। प्रतीत होता है कि इसमें विभिन्न विषयों का संकलन विभिन्न समयों में होता रहा था। इसी कारण अग्निपुराण की रचना के समय को निर्धारित करने के लिए विद्वानों के तीन वर्ग है।

(i) विभिन्न समय में प्रक्षिप्तांशों द्वारा अग्निपुराण को रचित मानने वाले विद्वान

(क) डॉ. बलदेव उपाध्याय के अनुसार पुराण किसी एक शताब्दी की रचना नहीं है, समय–समय पर उसमें नये–नये अध्याय जोड़े गए हैं। गुप्तकाल तक वे अपने पूर्णरूप को प्राप्त कर चुके थे।[31]

(ख) डॉ. विलसन का यह कहना है कि 'अग्निपुराण' की रचना तथा संकलन एक समय में नहीं हुआ था। यह कार्य विभिन्न समयों में हुआ था।

(ii) भरत समकालीन मानने वाले विद्वान

(क) कन्हैयालाल पोद्दार अलंकार तत्त्व की दृष्टि से अग्निपुराण का समय भरत के बाद और भामह एवं दण्डी के पूर्व का निश्चित करते हैं क्योंकि भामह के काव्यालंकार में प्रतिपादित रूपक, आक्षेप, समासोक्ति, पर्यायोक्त और अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार अग्निपुराण से ज्यों के त्यों मिलते हैं।[32]

(ख) डॉ. पारसनाथ द्विवेदी भी 'काव्यालंकारशास्त्रम्' में अग्निपुराण का समय तृतीय–चतुर्थ शताब्दी के मध्य मानते हैं।[33]

(iii) भोज से उत्तरवर्ती मानने वाले विद्वान

(क) डॉ. काणे 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' में अग्नि पुराण के काव्यशास्त्रीय भाग का समय 900 ई. या इसके बाद संभवत 1050 ई. के बाद का मानते हैं।[34]

(ख) डॉ. सुशील कुमार डे भी अग्निपुराण के अलंकार प्रकरण को 900 ई. के मध्य काल का मानते हैं।[35]

इस प्रकार ऊपर वर्णित तीनों प्रकार के मतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अग्निपुराण यद्यपि एक प्राचीन पुराण है तथापि इसमें विभिन्न विषय बाद तक समाविष्ट किये जाते रहे हैं जिसके कारण अग्नि पुराण के काल निर्धारण का कार्य जटिल हो गया है। तथापि विद्वान लोग चतुर्थ शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक की रचना स्वीकार करते हैं।

उपसंहार

अग्निपुराण के समय का निर्धारण करना एक कठिन कार्य है परन्तु फिर भी भारतीय विद्वानों के द्वारा कालनिर्धारण करने के लिए प्रयत्न किये गये। कुछ समालोचकों के अनुसार अग्निपुराण समय–समय पर प्रक्षिप्त अंशों से बना है। इनमें डॉ. बलदेव उपाध्याय, डॉ. विलसन, डॉ. विन्टरनित्ज इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कुछ समालोचक अग्निपुराण का निर्माण भरतमुनि के समकालीन मानते हैं। इनमें कन्हैयालाल पोद्दार, डॉ. पारसनाथ द्विवेदी प्रमुख हैं।

किन्तु आधुनिक आलोचकों का यह विचार है कि 'अग्निपुराण' की रचना भारत पर मुसलमानों के प्रथम आक्रमण के समय हुई होगी। क्योंकि 'अग्निपुराण' में एक स्थल पर लिखा है कि इस देश के राजा म्लेच्छ होंगे और वे मनुष्यों का भक्षण करेंगे। ये 'म्लेच्छ मुसलमान ही थे, जिन्होंने नवीं शताब्दी में भारत पर आक्रमण किया था। अतः 'अग्निपुराण' की रचना का समय नवम् शताब्दी निश्चित किया जा सकता है।

'अग्निपुराण' में जिन रीति–रिवाजों तथा सामाजिक व्यवहारों का उल्लेख है उस पर तान्त्रिक उपासना पद्धति का प्रभाव भी परिलक्षित होता हैं। अतः इस पुराण की रचना उस समय हुई होगी, जिस समय इस देश में तान्त्रिक पूजा प्रारम्भ हो गई थी। तान्त्रिक पूजा का प्रारम्भ भारतवर्ष में 8वीं–9वीं शताब्दी के

---

24 अग्निपुराण 5/112

25 अग्निपुराण 8/244, 245

26 अलंकार शास्त्र का इतिहास, कृष्ण कुमार, पृ. 46–50

27 संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, पृ. 55

28 अग्निपुराण 4/78

29 अग्निपुराण 5/109

30 नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा। साहित्यदर्पण प्रथम परिच्छेद

31 संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, पृ. 55

32 अलंकार शास्त्र का इतिहास, कृष्ण कुमार, पृ. 46

33 अलंकार शास्त्र का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, पृ. 55

34 संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, काणे, पृ. 9

35 हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पॉयटिक्स, सुशील कुमार डे, पृ. 97–99

लगभग हुआ था। अतः यह कहा जा सकता है कि 'अग्निपुराण' की रचना 9वीं शताब्दी के लगभग हुई होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. काणे, पी.वी., 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1966.
2. डे, सुशील कुमार, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बिहार, 1973.
3. कीथ, ए.बी., 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1988.
4. उपाध्याय, बलदेव, 'भारतीय साहित्य–शास्त्र', प्रसाद परिषद काशी, द्वितीय संस्करण, 2012.
5. सैनी, सुनीता, 'अग्निपुराण में विविध विधाएँ', अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
6. कुमार, कृष्ण, 'अलंकार शास्त्र का इतिहास', साहित्य भण्डार, मेरठ, 1975.
7. गैरोला, वाचस्पति, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1991.
8. पोद्दार, सेठ कन्हैयालाल, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1997.
9. उपाध्याय, बलदेव, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', शारदा मन्दिर, बनारस, 1987.
10. नागेन्द्र, 'भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1973.
11. अवस्थी, श्री एवं पाण्डे, विश्वनाथ, 'पुराण पर्यालोचन', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 1975.
12. उपाध्याय, बलदेव, 'संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास', उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1977.